शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की उपन्यास "श्रीकांत" में अभया रोहिणी की प्रेम की नई मूल्यांकन ।

डॉ0 गोपाल पाल
बांग्ला विभाग
देवघर कॉलेज,देवघर
झारखंड

प्रथम अध्याय :—

समाज में जहां भी स्त्री—पुरुष का अभाव है, शोषण है, अन्याय है नारी की अस्मिता का अनादर किया जाता है या अश्लीलता के अँधेरे में डाल दिया जाता है वहां मूल्यांकन का प्रश्न उठता है, वह आकलन यानी स्त्रीत्व का अधिकार पुरुषों का प्रेम मूल्यों और महिलाओं के जीवन का अस्तित्व है। हर लेखक पुरुष या महिला दोनों जीवन को महत्व देना चाहते हैं लेकिन महिलाओं को सम्मान देना चाहते हैं जिसकी वह हकदार हैं कुछ लोग जोर—जोर से विरोध करते हैं और कुछ चुपचाप व्यक्त करते हैं। यह नया आकलन यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को उचित मूल्य देने के लिए पुरुषों को बाहर नहीं किया जा सकता है यदि स्त्री—पुरुष साथ—साथ रहेंगे तो जीवन की राह सुगम होगी। रवीन्द्रनाथ चित्रांगदा नाटक में चित्रांगदा अर्जुन से कहती है—

> यदि आप संकट में विपद में पास में रखेंगे तब आप पहचान पायेंगे,
> यदि अनुमति देते कठिन व्रत में शामिल होंगे
> तब आप पहचान पायेंगे। (1)

इस प्रकार रवीन्द्रनाथ ने स्त्री—पुरुष के जीवन का मूल्यांकन कियें है।
शरतचंद्र भी स्त्री—पुरुष के जीवन—मूल्य को खोजने का प्रयास करते हैं, लेकिन उन्हें स्त्री की मन देखे एक द्वंद्व के माध्यम से जहां उसकी सहज आकांक्षाओं का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है शाश्वत सुधार की पत्थर की दीवार में पाया गया।

द्वितीय अध्याय :—

द्वितीय शरतचंद्र के उपन्यास श्रीकांत में घुमक्कड़ श्रीकांत के जीवन में अनेक स्त्री—पुरुष प्रकट हुए, जिस दिन राजलक्ष्मी ने श्रीकांत का आश्रय छोड़ दिया और वर्मा के लिए निकल पड़ीं, जहाज पर अभया की मुलाकात रोहिणी से हुई। चक्रवात के अगले दिन जब श्रीकांत को देखा गया देखिये कि सभी जहाज बर्बाद हो गये हैं और भूख से बेजान की तरह कुर्सियों पर बैठे हैं, सोचते—सोचते अभया उभर आता है. वह रोहिणी का बीमारी के लिए मदद मांगती है। श्रीकांत एकांतवास में बाइस—तेईस साल की बंगाली नारी अभया की रूप का परिचय देते हैं। यह तर्क दिया जाएगा कि लड़की का चेहरा सुंदर है, लेकिन यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे नजरअंदाज किया जाए।

यह युवा महिला चौड़े माथे पर इतनी बुद्धि और निर्णय। मैंने आभास देखा, जो मैंने कम ही देखा है. मेरी अन्नदा दीदी की माथा भी उनकी तरह थी के समान सिन्था सिन्दूर का श्रृंगार कर रही है, उसके हाथ में एक शंख और कोई अन्य आभूषण नहीं है। लाल रंग की साड़ी पहने हुए। (2)

अभया बीमार रोहिणी को डॉक्टर के पास ले जाती है, श्रीकांत के अनुरोध पर डॉ. बाबू ने रोहिणी के लिए श्रीकांत को आवेदन दिया उसने दवा दी, जब वह उस रात दोबारा श्रीकांत के पास आयी, तो अभया ने परिचय दिये, उत्तरराड़ कायस्थ, घर बलुचर के पास, जो व्यक्ति बीमार है, उसका नाम रोहिणी सिंह, गांव के रिश्ते में भाई हैं, उस व्यक्ति को खोजने के लिए रोहिणी के साथ बर्मा की यात्रा कर रही हैं ।

उनके पति आठ साल पहले बर्मा में काम करने आए थे कोई खबर नहीं, अभया के रिश्तेदारों कोई नहीं है, एक महीने पहले मां की भी मौत हो गई, इसलिए चूँकि अभिभावक के बिना रहना असंभव है, इसलिए उसकी तलाश में जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभया एक पवित्र महिला है, जबकि श्रीकांत अभया का पति के बारे में कहे मैं कसम खा कर कह सकता हूं कि वह जीवित है. फिर – 'अचानक अभया ने मेरे पैर पर अपना हाथ रखा और अपनी सिर पर हाथ रखकर कही, आपके चेहरे पर फूल चंदन को पढ़ने दीजिए, श्रीकांतबाबू, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। केवल वह जीवित रहे।(3)

अभया भी सौतन के साथ रहने को तैयार है, लेकिन सौतन मानेगी या नहीं, इसे लेकर अभया की आंखों में आंसू आ गए हैं। श्रीकांत ने असहाय अभया को वादा किये, जिसे आधिकारिक मंजूरी मिल गई, एक–दो दिन शहर के गेस्ट हाउस में शरण लेने के बाद उनके लिए एक घर की व्यवस्था करके, उसके बाद ही वह अपने स्थान पर जायेंगे. अभया अपने पति का पता जानना चाह, वह कहीं भी रहता हो उसे संदेश भेजने का प्रयास करें. एक–दो दिन में श्रीकांत उनके लिए नया घर में बसाने के बाद वह अपने लिए आश्रय ढूंढने चला गया। हालाँकि अभया के मन में रोहिणी के प्रति द्वेष थी, लेकिन उसने उस द्वेष से छुटकारा पा लिया।

अगले दिन दोपहर को श्रीकांत अभया–रोहिणी के घर आये और रोहिणी अभया को देखा। अभया अपने पति को खोजने के लिए बेताब है, रोहिणी को सच्चाई पता चल जाती है कि रोहिणी को अभया से बहुत प्यार हो गया है, दो दिन बाद इसका सबूत भी मिल गया। रोहिणी को बाजार में सड़क किनारे सब्जी खरीदते देखकर श्रीकांत इन खरीदारी के माध्यम से अपने भावुक स्नेह को देखकर आश्चर्यचकित हैं तो, वह कहते हैं––– "यह प्यार" जैसा इतनी बड़ी शक्ति, इतना महान शिक्षक दुनिया में नहीं है।(4)

रोहिणी अभया को सभी खुशियों से भर देना चाहती है, उसी दिन अभया को चीख कर रो रही थी, जिसका मूक गवाह श्रीकांत रहे ।

श्रीकांत को जिस लकड़ी व्यापारी के ऑफिस में नौकरी मिली थी, उसका मैनेजर एक दिन पहले ही एक क्लर्क को निलम्बित किया गया था, यह बात श्रीकान्त को आज समझ में आ रहा वो सज्जन जो अभया के पति हैं। हैटकोट पहना हुआ है, लेकिन उतना ही पुराना, जितना गंदा है। काला चेहरा घनी मूंछों से ढका हुआ है, निचला होंठ पूरे चेहरे पर डेढ़ इंच मोटा है। पान से भरा हुआ, बोलने पर पान की थुक गिरती है। श्रीकांत का मानना है कि इस व्यक्ति के साथ अभया के बारे में सोचने से मन और शरीर सिकुड़ जाता है, श्रीकांत को अपने खुशामद करता है नौकरी वापस पाने का लालच में, इसलिए जब अभया के बारे में पूछा गया तो वह कहता हैं––– 'वह एक बुरी महिला इसलिए मैंने मन ही मन देश छोड़ दिया.(5)

जब श्रीकांत ने उन्हें काम से निकाल देने का धमकी दिये तब अभया के संबंध में उस आदमी का चरित्र फिर से बदल गया, बहुत सराहना हुई, श्रीकांत उन्हें सशर्त बहाल करेंगे। उस शर्त के अनुसार उसे बहाल कर दिया गया । जिस दिन अभया अपने पति के घर के लिए रवाना होती है, उससे पहले अभया श्रीकांत को रोहिणी के बारे में बताती है। हमें उस पर हमेशा नजर रखनी चाहिए –"वह कितना दुखी है, कितना कमजोर है, कितनी बेबस"(6)

उस दिन रोहिणी को अकेलापन, जीवन महसूस हुआ, श्रीकांत अपने एकांत जीवन को देखते हैं और कहते हैं "मैंने देखा, सारा समाज, सभी धर्मों, सभी पापों और पुण्यों से परे, एक तीव्र दर्द भरी चीख से पूरा घर गूंज उठा यह ऐसा है मानो दाँतों को दाँतों से मजबूती से दबाया गया हो।(7)

श्रीकांत रोहिणी का निःस्वार्थ प्रेम इनकार नहीं कर सकते, अपमान नहीं कर सकते. रोहिणी आज अभया न होने के कारण उसने ट्यूशन छोड़ दिया, आज उसका शरीर और दिमाग दोनों ठीक नहीं हैं, लेकिन वह अभी भी

उसी घर में है रोहिणी खाली दिल के साथ रहती है, उसके दिल में केवल एक ही उम्मीद है। असफल जीवन के बोझ ने रोहिणी को झकझोर कर रख दिया था।

कुछ दिनों के बाद अभया अपने पति के अत्याचार को सहन नहीं कर सकी और रोहिणी के घर में रहने लगी श्रीकांत से मिलने के बाद, अभया अपने पति द्वारा कोड़े मारे जाने का सबूत दिखाती है। पति की इजाजत के बिना किसी दूसरे मर्द के साथ इतनी दूर आने की सजा मिलती रहा है श्रीकांत ने भी मन में सोचा, "अंधविश्वास का परिणाम के कारण अभया हमको देखने दौड़ के आई वह संस्कार तो मेरा मन में छिपा रखा था। (8)

श्रीकांत अवाक रह गये वह हाँ या ना कहने में असमर्थ रहा, लेकिन उसके उत्तर में एक अस्पष्ट "लेकिन" था (9)

अभया आज विरोध करने को मजबूर है, इसलिए वह श्रीकांत से न्याय मांग रही है———"उसे अपनी केवल पत्नी के साथ खुश रहना चाहिए, मैं शिकायत नहीं कर रही हुँ, लेकिन जब पति ही बेंत के जोर से पत्नी के सारे अधिकार छीनकर उसे अंधेरी रात में अकेला छोड़ दिया जाता है उसके बाद भी विवाह में वैदिक मंत्रों के बल पर पत्नी के कर्तव्यों का दायित्व निभाया जाता है या नहीं, मैं आपसे जानना चाहता हूं.(10)

तृतीय अध्याय II:

अभया तो सती रमणी जैसे पति का यातना देने के लिए बलिदान नहीं दिया, इसलिए उनका स्पष्ट विरोध श्रीकांत जैसे समाज के दुविधाग्रस्त लोगों के पास । हमारे मध्यवर्गीय हिंदू समाज में जहां अपने पति के पास पड़े रहना यह सदाचार या पवित्रता माना जाता है अभया ने वहां विरोध किया, उसने श्रीकांत से पूछा, "जिसका पति इतना बड़ा अपराध करता है तो उसकी पत्नी को उस अपराध का प्रायश्चित करने के लिए जीवन भर याद रखना उस नारी जन्म की अंतिम सफलता है।"(11)

एक दिन मध्यवर्गीय घरों की लड़कियों के विवाह के मंत्र को उच्चारण करा लेता है, मध्यम वर्ग महिलायें को नहीं पूछा जाता कि जिससे वह शादी करेगी उसे वह पसंद है या नहीं, यह उसकी मर्जी का सवाल है या नहीं कोई जानना नहीं चाहता. अभया के मामले में भी यही हुआ, लेकिन अभया हार नहीं गये, उसने नारीत्व के अधिकार पर सवाल उठाती है – "क्या उसका सारा नारीत्व असफल हो गया है, अपंग हो गया है, क्योंकि एक अपमानजनक झूठा,निर्दय पति अपनी पत्नी को बिना किसी गलती के भगा देता है"(12)

अभया को सब कुछ सहना पड़ता है क्योंकि वह एक हिंदू घर में एक इंसान के रूप में पैदा हुई वो यह आदि सत्य को स्वीकार नहीं कर सकते श्रीकांत ने अभया को सांत्वना दिये। उदाहरण के लिए अन्नदा दीदी और पियारी बाईजी के दुःख की कहानी सुनाता हैं, अभया दुःख भरी कहानी सुनती हैं, मजबूर होकर, क्या आप यह कहना चाहते हैं कि महिलाओं के सामने ऐसे दुर्भाग्य हमेशा घटित होते रहते हैं ?

उस कष्ट को आना और सहना ही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है ? श्रीकांत उसका जवाब नहीं दे सके ।

चतुर्थ अध्याय II:

अभया आज अपने पति के पास दुर्व्यवहार सहन कर लौटने के बाद एक और मध्यम वर्ग स्त्री की तरह जीवन में दुःख को धन नहीं मानती, अपमान से बचने का रास्ता अपनाने के बजाय, वह गरज से घोषणा करती है कि वह अपने पति के साथ है वैश्या की तरह गिरना नहीं चाहती। उसके दिल के राज में जो प्यार छिपा था मजबूरन दुख व्यक्त करते हुए श्रीकांत से इसके बारे में पूछा "क्या आपने रोहिणी बाबू को देखा है ? उसका

प्यार आपके लिए अदृश्य नहीं है ऐसे व्यक्ति का सारा जीवन अपाहिज करके मैं सती का नाम खरीदना नहीं चाहती हूं। श्रीकांत बाबू"(13)

केवल एक रात की नकली शादी, दोनों के लिए जीवन भर का झूठ हो गया, जबरदस्ती उनके यानि रोहिणी के साथ अपने प्यार को विफल नहीं करना चाहती। अभया आज कोई समाज–परिवार, मान–अपमान डर नहीं है, डर को तिरस्कार करके और स्पष्ट रूप से कह सकें "आप मेरे बारे में जो चाहें, मेरे बारे में सोच सकते हैं। भावी संतानों को चाहे जो बुलायें, पर यदि मैं जीवित रहूँगी तो श्रीकांतबाबू, हमारे मासूम प्यार के बच्चे इंसान के तौर पर दुनिया में किसी से कमजोर नहीं होंगे मैं आपको निश्चित रूप से बता रहीं हुं।"(14)

चुनौती भरे स्वर में अभया ने घोषणा की कि इससे बढ़कर और क्या होगा यदि हिंदू समाज उसे अस्वीकार कर देता है तो क्या ज्यादा पवित्र बनता । वह अपने होने वाले बच्चों को इंसानों की तरह इंसान बनाना चाहती है। आज वह निर्भय होकर रेहिणी के साथ अपने प्रेम संबंध और उसके पति की प्रताड़ना को झलते हुए स्पष्ट रूप से व्यक्त किये गया है कि भावी जीवन में रोहिणी को ही अपना साथी बनाई, आज श्रीकांत स्वीकार करते हैं– "आप जिसकी माँ होगीं उसे दुर्भाग्यशाली यह सोचने के लिए मैं बिल्कुल नहीं कर सकता।"(15)

राजलक्ष्मी के शब्दों में कहा जा सकता है कि आज अभया के अंदर आग जल रही है इसलिए पराई स्त्रियों से मेल–जोल रखना उचित नहीं है। राजलक्ष्मी उनका निःस्वार्थ प्रेम उन्होंने स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं किया। उनके प्यार और स्पष्ट सत्यता के लिए सौ–हजारों ने नमस्कार किया.

पंचम अध्याय II:

जैसे रवीन्द्रनाथ ने नारी के भिन्न–भिन्न रूप देखे, कभी प्रेमिका, कभी देवी, कभी मानसी, कभी गृहिनी के रूप में नजर आती हैं वह महिलाओं की वंचना और अपमान देखकर विद्रोही रूप दिखता है जैसे रक्तकरबी नाटक में नंदिनी, चतुरंग उपन्यास में दामिनी, गोरा उपन्यास में ललिता, आनंदमयी और चोखेरवालु में बिनोदिनी की प्रतिवादी इकाई मिलती है। बहुत लघु कहानी में अनेक महिला पात्रों के बीच नारीत्व की गरिमा का प्रश्न, प्रेम का प्रश्न उठाया गया है। पटकथा "चित्रांगदा" में चित्रांगदा उस व्यक्ति को अपने पास लाने के लिए कहती है जिससे वह प्यार करती है ––"न कोई देवी, न कोई सामान्य नारी हमको पूजा करके सर पर रखिये वो भी नहीं हुँ मैं" (16)

यदि संकट में पास में रखते तो आप केवल उसे पहचान सकते हैं शरतचन्द्र की सृष्ट अभया कोई अतिरिक्त लाभ नहीं चाहती, बस पति के करीब जाना चाहती थी, जिस दिन पति ने उसे वह दर्जा नहीं दिया, जिसकी वह हकदार थी जिस दिन उसका नारीत्व सही कीमत पाने के लिए जाग उठा, उस दिन उसे प्रताड़ित किया गया और भगा दिया गया । श्रीकांत के पास घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा, "एक रात की शादी समारोह पति–पत्नी दोनों के लिए एक झुठा सपना बन गया है, वह उसे मजबूर करके इसे जीवन भर बरकरार रख कर रोहिणी के साथ प्रेम को व्यर्थ कर देंगे ?(17)

जैसे रवीन्द्रनाथ की नारी खुलकर प्रेम की घोषणा करती है–– "हर बार हार
उतना वार वो कहते हैं, मैं जिससे प्यार करती हूं ।
क्या वह मुझसे दूर जा सकता है। (18)

यानी शरतचंद्र में सुधार की दुविधा है, लेकिन अभया में नहीं, नारीत्व, विवाह, मातृत्व का दर्जा पाने को लेकर कोई पूर्वाग्रह या दुविधा नहीं देखी गई, इसलिए वो सारी बाधाओं को छोड़कर रोहिणी के प्रेम को जीवन का पथ बना लेती है ।

सन्दर्भ:

1. श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रांगदा पटकथा, रवीन्द्र नाटक समग्र, खंड 2, कामिनी प्रकाशालय, प्रथम संस्करण, जनवरी–09, प्रकाशक श्यामपद सरकार, पृष्ठ–638
2. श्रीकांत अखंड, शरतचंद्र चटर्जी इंडियन एसोसिएटेड पब्लिशिंग कंपनी। प्राइवेट लिमिटेड वर्तमान संस्करण, भाद्र 1392, भाग 2 पृष्ठ–37
3. तदेवः पृष्ठ 42
4 तदेव पृष्ठ 68
5. तदेव पृष्ठ 75
6 तदेव पृष्ठ 81
7. तदेव पृष्ठ 82
8. तदेवः पृष्ठ 94
9. तदेवः पृष्ठ 94
10. तदेवः पृष्ठ 94
11 तदेवः पृष्ठ 95
12. तदेवः पृष्ठ 95
13. तदेव पृष्ठ 99
14. तदेव पृष्ठ 99
15. तदेव पृष्ठ 101
16. चित्रांगदा पटकथा, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्र नाटक समग्र, द्वितीय खंड, कामिनी प्रकाशालय, प्रथम संस्करण, जनवरी 09, प्रकाशक–श्यामापद सरकार, पृष्ठ–638
17. श्रीकांत अखंड, शरतचंद्र चटर्जी, इंडियन एसोसिएटेड पब्लिशिंग कंपनी। प्राइवेट लिमिटेड वर्तमान संस्करण, भाद्र 1392, पृष्ठ–99
18. सोनार तरी, जाने नहीं देंगे, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, विश्व भारती संस्करण – फाल्गुन 1334, जैष्ठ पृ.–66

–:समाप्तः–